गद्य (पुरूष)

शार्विलकः अपनी शिक्षा के कौशल और शक्ति के प्रभाव से मेरे शरीर की विशालता आराम से जिसमें से निकल जाए, ऐसी सेंध फोड़कर, बगलों पर सरकार, केंचुल छोड़कर पतले होते हुए साँप की तरह मै अन्दर घुस जाऊँ।

(आकाश की ओर देखर सहर्ष) अरे! क्या भगवान् चन्द्र अस्ताचल की ओर जा रहे है? दूसरे के घर को दूषित करने में निपुण एवं पहरेदारों के शंकास्थान मुझ शर्विलक को, घने अन्धेरे से सबको ढँकनेवाली यह रात माता की भाँति स्नेह के आवरण में ढक लेती है, बाग में सेंध लगाकर मैं चहारदीवारी में तो घुस गया हूँ। अब अन्तःपुर में भी सेंध लगाँऊ। मनुष्यों के सो जाने पर होने वाली चोरी को लोग भले ही नीच काम कह लें, क्योंकि इसमें विश्वस्त जनों का माल गुम हो जाने पर अपमान होता है, वे भले ही चोरी कहें, पराक्रम नहीं–लेकिन यह धूर्तता स्वतन्त्र है और उत्तम है। इस काम में किसी का दास बनकर हाथ नहीं जोड़ना पड़ता है और फिर यह तो बहुत प्राचीन काल से होता आ रहा है–द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने सोते हुए युधिष्ठिर के पुत्रों को मारा था। अब में सेंध कहाँ फोडूँ। वह भीत की कौन–सी जगह है जहाँ निरन्तर पानी पड़ने से शिथिलता आ गई हों वहाँ सेंध लगाते समय शब्द नहीं होगा। जगह तो वही ठीक है जहाँ से मुझे कोई देख न सके, पर मैं खूब बड़ी मोरी बना लूँ। लवण के शिथिल पड़ने पर कौन–सी जगह ऐसी कमजोर पड़ गयी हैं जैसे कोई मिट्टी का ढेला हो। वह कौन–सी जगह है जहाँ स्त्रियाँ आती–जाती न हों। वहीं मुझे चोरी में सफलता मिलेगी यहाँ (दीवाल छूकर) नित्य सूर्य को जल देने से मिट्टी नरम पड़ गई है और यहाँ तो चूहों ने भी धूल का ढेर लगा दिया है। चलो, अपने–आप सारा काम बन गया। कार्तिकेय के पुत्र चोरों की सिद्धि का यह पहला लक्षण है। भगवान् कनकशक्ति ने सेंध फोड़ने के चार नियम बतायें है, जैसे भीत की ईटें पक्की हों तो उन्हें खींचना चाहिए, ईटें कच्ची हों तो खींचना नहीं, काटना चाहिए। काठ की भीत हो तो चीरना चाहिए और मिट्टी–संपुटित हो तो खींचना ठीक है। यहाँ तो पक्की ईटें है। खीचना चाहिए। खिले हुये कमल–सी, सूर्यमण्डल–सी, अर्द्धचन्द्र–सी, फैले हुये तालाब–सी, त्रिकोण स्वस्तिक–सी या पूर्णकुम्भ–सी इनमें से कौन–सी सेंध कहाँ फोडूँ। कहाँ अपनी चतुराई दिखाऊँ कि कत नगरवासी जब देखें तो देखते रह जाये ? इस पक्की ईटों के घर में तो पूर्णकुम्भ की सी सेंध ही ठीक रहेगी।

नाटक–मृच्छकटिक
नाटककार–शूद्रक

लोपाख़िनः

मैनें ख़रीदी है। महानुभावो, कृपया ज़रा रूक जाइये, मेरा सिर चकरा रहा है, मुझसे बोला नहीं जा रहा है..... हम नीलाम में पहुँचे, देरीगानोव वहां पहले से मौजूद था। लेओनीद अन्द्रेयेविच के पास सिर्फ़ पन्द्रह हज़ार रूबल थे और देरीगानोव ने बक़ाया क़र्ज़ के अलावा तीस हज़ार की बोली दी। मैंने देखा कि मामला चौपट हो रहा है, मैं सामने आ गया, और मैंने चालीस हज़ार की बोली दे दी। उसने पैंतालीस हज़ार कहे, मैंने पचपन। मतलब यह कि वह पांच हजार बढ़ाता रहा और मैं दस..... आख़िर बोली ख़त्म हुई। मैंने बक़ाया क़र्ज़ के अलावा नब्बे हज़ार कहे और बोली मेरे नाम पर छूट गयी। चेरी की बगिया अब मेरी है। मेरी है! हे भगवान, हे ईश्वर, चेरी की बगिया मेरी है! मुझसे कहिये कि मैं नशे में हूं, कि मेरा दिमाग़ चल निकला है, कि मैं यह केवल सपना देख रहा हूं..... मुझ पर हंसिये नहीं! काश मेरे बाप–दादा क़ब्रों से बाहर आकर यह सब देख सकते कि कैसे उनके येर्मोलाई ने, उनके निकम्मे, बुद्धू येर्मोलाई ने, जो जाड़े में नंगे पांव भागा फिरता था, कैसे उसी येर्मोलाई ने वह जागीर ख़रीद ली है जिससे बढ़कर कोई जागीर दुनिया में नहीं है। मैंने वह जागीर ख़रीद ली है जहां मेरे पिता और दाद भूदास थे, जहां उन्हें रसोईघर तक नहीं जाने दिया जाता था। शायद मैं नींद में हूं, मुझसे यह सपना–सा लग रहा हैं, सिर्फ़ ऐसे प्रतीत हो रहा है..... यह तो केवल मेरी अज्ञानता के कोहरे से ढकी कल्पना की उड़ान है। ..... वार्या ने चाबियां फेंक दीं, यह दिखाना चाहती है कि वह यहां की मालिकिन नहीं है..... खैर, कोई बात नहीं।

अरे ओ बजवैयो, बजाओ बाजे, मैं सुनना चाहता हूं! सभी यह देखने आना कि कैसे येर्मोलाई लोपाख़िन कुल्हाड़ा लेकर चेरी की बागिया को काटेगा, कैसे पेड़ कट–कटकर धरती पर गिरेंगे! यहां हम बंगले बनायेंगे और हमारे पोते–परपोते यहां नयी जिन्दगी को देख सकेंगे.. ... बजवैयों, बजाओ बाजे!

किसलिये, किसलिये आपने मेरी बात नहीं मानी? ओह बेचारी, अच्छी ल्युबोव अन्द्रेयव्ना, जो हो गया, उसे अब लौटाया नहीं जा सकता। काश, यह सब कुछ जल्दी से ख़त्म हो जाता, काश, किसी तरह हमारी यह बेहूदा, दुख–दर्दों की मारी जिन्दगी जल्दी से बदल जाती।

बाजेवालो, अच्छी तरह से बाजे बजाओ! जैसे मैं चाहता हूं, सब कुछ वैसे ही होना चाहिये! नया ज़मीनदार, चेरी की बगिया का नया मालिक आ रहा है! मैं हर चीज़ की क़ीमत अदा कर सकता हूं।

नाटक–चेरी की बगिया
नाटककार–अन्तोन चेख़ोव